मधुबन ओम् शान्ति अंक 296 मार्च 2017

# पत्र-पुष्प

परमपिता शिव परमात्मा
ज्योति बिन्दु स्वरूप

## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-02-17)

**प्राणप्यारे** अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए, अपनी खुशनुमा जीवन द्वारा सर्व को खुशी का दान देने वाली, सदा क्लीयर और केयरफुल रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार के साथ अपने प्यारे शिव भोलानाथ बाप की जयन्ती सो हम बच्चों की जयन्ती सो गीता जयन्ती की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

बाद समाचार - आप सभी शिव भोलानाथ बाबा की 80 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती खूब धूमधाम से मना रहे होंगे! यह खुशियों भरा त्योहार भी सबमें कितना उमंग-उत्साह भर देता है। इस अवसर पर सभी अथक बन बाबा को प्रत्यक्ष करने की, उनका सन्देश पहुंचाने की बहुत अच्छी सेवायें करते हैं।

हम सबके नयनों में, मन में, दिल में सदा एक बाबा ही समाया हुआ है, जहाँ देखती हूँ, बाबा ही बाबा है। स्मृति, वृत्ति, दृष्टि सबमें एक बाबा दूसरा न कोई। चलते फिरते, खाते-पीते, सभा में हैं या अकेले में हैं, मैं देख रही हूँ हर एक के दिल में बाबा है। बाबा हमको कितना पूज्यनीय मूर्त बना रहा है। समय और भावना अनुसार हम कोई भी काम करते हैं तो बाबा आपेही पूरी कराता है, सहयोगी भी मिल जाते हैं। निश्चय के बल से निश्चिंत रहते हैं तो सब अच्छा ही होता है। बाबा की याद से संगम पर संकल्प भी सफल हो रहे हैं तो हमारे संकल्पों की वैल्यु और बढ़ जाती है।

बाबा ने अपना बनाके सदा के लिये मुस्कराना सिखा दिया है, तो मुस्कराने के बिगर मजा नहीं है क्योंकि यहाँ है भगवान और यहाँ है भाग्य, दोनों ही इस समय प्राप्त हैं। सच्चाई, प्रेम, खुशी और शक्ति बाबा ऐसी दे रहा है, यह भी भाग्य है। बाबा कहता है तुम मेरे बच्चे हो ना! बाबा बच्चों को देख बड़ा खुश होता है, बच्चे बाबा को देख डांस करने लग जाते हैं। पहले छोटे थे तो गोद बिठाया, फिर माला का दाना बनाने के लिये गले लगाया। वही बाबा फिर टीचर बनकरके पढ़ाने लगा, यह पढ़ाई बड़ी अच्छी है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप यह हमारी लाइफ है।

बाबा के हम सब बच्चे त्रिकालदर्शी हैं, जो बीता सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा वह और अच्छा... यह पक्का है ना! किसी का कोई क्वेश्चन है? क्योंकि फुलस्टॉप देना इज़ी है, कभी भी कोई क्वेश्चन नहीं उठाना, एक में पूरा विश्वास है तो फुलस्टाप लगता है। जहाँ भी रहें, सुख शान्ति से रहें तो और कोई बात नहीं है। जिनकी सहनशक्ति बहुत अच्छी है, जिनके पास समाने की, समेटने की शक्ति है, कोई भी बात की डिटेल में नहीं जाते, शॉर्ट में जो बोलना है वह बोला, तो यह लाइफ कितनी लाइट है। उस लाइट में माइट है, शक्ति है। ऐसा संस्कार बन जायेगा तो गैरंटी है हमारी इस कलियुग से छुट्टी हो जायेगी। बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें बाबा रोज़ सपनों में आता है ना! बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। कितना प्यार दिया है, वो हम आपस में भी दृष्टि के द्वारा लेन-देन करते, सदा लाइट रहते हैं, सबको माइट देते हैं, ऐसा ही अनुभव है ना!

बाकी आप सबकी तबियत ठीक होगी! मधुबन में तो सदा ही सेवाओं की बहार है। एक ग्रुप जाता है, दूसरा आ जाता है। बाबा ने हमें भी शान्तिवन की कुटिया में बिठा दिया है। रोज़ शाम को सबसे मिलन मनाते मन हर्षाता रहता है।

आप सभी भी खुशियों में नाचते संगमयुग की मौजों का अनुभव करते होंगे। अच्छा

- सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,
***बी.के.जानकी***

# ये अव्यक्त इशारे

## "संगठन रूपी किले को मजबूत बनाओ"

**1)** संगठन में हर एक के संस्कार तो भिन्न-भिन्न रहेंगे ही इसलिए यह नहीं सोचो कि इसके संस्कार बदल जाएं लेकिन उन संस्कारों का प्रभाव हमारे ऊपर न हो, यह ध्यान दो। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए टक्कर न हो, इसके लिए नॉलेजफुल बनो। कोई रांग करता है तो उसे परवश समझ रहम की दृष्टि से परिवर्तन करो, डिस्कस नहीं करो।

**2)** अगर कोई गाली दे, इन्सल्ट करे तो आप सेंट बन जाओ। नम्रता का कवच पहनकर रहो। अगर आपसे कोई टक्कर लेता है तो आप उसे स्नेह का पानी देते जाओ जिससे अग्नि पैदा न हो।

**3)** हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखो, शुभ भावना सफलता को अवश्य प्राप्त करायेगी। जैसे बाप अपकारियों पर भी उपकार करता है, ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो, अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन करो।

**4)** एक-दूसरे की कमजोरी का न तो वर्णन करना है, न उसे स्वयं में धारण करना है। अगर कोई किसी की कमजोरी आपको सुनाये तो शुभ भावना से उससे किनारा कर लो। बीती हुई बात को रहमदिल बन समा लो।

**5)** अगर कोई गलत कार्य कर रहा है, आप जानते हो यह ग़लत है तो उस समय समाने की शक्ति यूज़ करो। एक-दो को श्रेष्ठ भावना का सहयोग दो। ग़लती को नोट न करो, उसे सहयोग का नोट दो ताकि वह दुबारा ग़लती न करे।

**6)** किसी भी आत्मा के कमजोर संस्कारों को देखते हुए उस आत्मा के प्रति अशुभ वा व्यर्थ नहीं सोचना है। कमजोर आत्मा को भी सदा उमंग-उल्हास के पंख दे शक्तिशाली बनाकर उड़ाना है। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं रखनी है।

**7)** लोक संग्रह अर्थ यदि किसी बात के लिए कोई श्रीमत मिलती है तो उस समय अपनी मत नहीं चलानी है। अपने को राइट सिद्ध नहीं करना है। भल आप राइट भी हो लेकिन श्रीमत पर अटेन्शन देना है क्योंकि सत्यता महानता है और जो महान् है वह झुकता है इसलिए कभी भी क्यों, क्या में न जाकर फुल स्टॉप लगा दो अर्थात् स्वयं को मोल्ड कर लो। एक ने कहा, दूसरे ने माना तो अनेकों को सुख देने के निमित्त बन जायेंगे।

**8)** संगठन रूपी किले को मजबूत बनाने के लिए अगर एक के लिए दूसरा कुछ बोलता है तो वह चुप रहे। दूसरे को बदलने के लिए सहन करना होता है। जैसे ब्रह्मा बाप जो इतनी बड़ी अथॉरिटी थे, उन्होंने भी इनसल्ट सहन की। छोटे-छोटे बच्चों से भी सुना, अज्ञानियों से भी सुना। जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया, तो फालो फादर।

**9)** संगठन में हरेक की राय को सम्मान देना है। यह कैसे होगा, यह नहीं हो सकता – ऐसे कट करना भी अपमान करना है। इसके बजाए कहो – हाँ, बहुत अच्छा है, इस पर विचार करेंगे। ऐसे उसे सम्मान दो तो वह सहयोगी बन जायेगा।

**10)** अगर कोई डिसयुनिटी का कार्य करता है तो आप युनिटी में रहो। दूसरों को नहीं देखो। आप युनिटी में होंगे तो दूसरे स्वत: आ जायेंगे। हर बात में, हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा एक-दो में युनिटी दिखाई दे। ब्राह्मण माना ही युनिटी।

**11)** सामना करने की शक्ति ब्राह्मण परिवार में यूज़ नहीं करनी है। वो माया के सामने यूज़ करनी है। परिवार से सामना करने की शक्ति यूज़ करने से संगठन एकमत नहीं हो सकता इसलिए एक ने कहा, दूसरे ने स्वीकार किया। अगर कोई बात नहीं भी जंचती है तो भी कट नहीं करना है, सत्कार देना है।

**12)** ब्राह्मणों की भाषा आपस में अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। किसी की सुनी हुई ग़लती को संकल्प में भी न तो स्वीकार करना है, न कराना है। संगठन में विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन करनी है।

**13)** संगठन को जोड़ने का धागा है फेथ। किसी ने जो कुछ किया, मानो रांग ही किया लेकिन जरूर उसका कोई भाव अर्थ होगा। उनके संस्कारों को रहमदिली की दृष्टि से देखते हुए उसमें भी कल्याण की भावना रखकर चलना है। बीते हुए संस्कारों की कभी भी वर्तमान समय से तुलना नहीं करनी है।

**14)** दूसरे की ग़लती को अपनी ग़लती समझना – यह है संगठन को मजबूत करना। यह तब होगा जब एक-दो में फेथ होगा। परिवर्तन करने का फेथ या कल्याण करने का फेथ रखो।

**15)** संगठन में आते हुए सर्व आत्माओं के प्रति सदा दया भाव

और कृपा दृष्टि रखो। इसी विधि से आपोजीशन वाला भी अपनी पोजीशन में टिक जायेगा। विरोधी आत्मा इस विधि से गले मिलने वाली बन जायेगी।

**16)** जैसे स्थूल किले को मजबूत किया जाता है जिससे कोई भी दुश्मन वार कर न सके। इसी रीति से मुख्य किला है संगठन का, इसमें भी इतनी मजबूती हो जो कोई भी विकार दुश्मन के रुप से वार कर न सके। अगर कोई दुश्मन वार कर लेता है तो जरुर किले की मजबूती की कमी है।

**17)** संगठन रुपी किले की मजबूती के लिए तीन बातों की आवश्यकता है – एक स्नेह, दूसरा - स्वच्छता और तीसरा - रुहानियत। यह तीनों बातें अगर मजबूत हैं तो कभी कोई का वार नहीं होगा। अगर कहाँ भी, कोई भी वार करता है तो उसका कारण इन तीनों में कोई ना कोई कमी है इसलिए हरेक स्थान पर इन बातों को फोर्स रखकरके भी लाना चाहिए।

**18)** जैसे स्थूल में वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए एअर फ्रेश करते हैं। इसी रीति से इन बातों का प्रेशर डालना चाहिए। अभी तक स्नेह और स्वच्छता से प्रभावित हो जाते हैं लेकिन मुख्य बात है रूहानियत। तो आपस में यह तीनों बातें एक दो को देकरके अटेन्शन दिलाने की आवश्यकता है।

*शिवबाबा याद है ?* *ओम् शान्ति* 10-05-13 *मधुबन*

# "भगवान की दया और सबकी दुआयें मुझ आत्मा को सर्वगुण सम्पन्न बना देंगी"

**(दादी जानकी)**

बाबा के महावाक्यों से ही निश्चय बैठता है। जो निश्चयबुद्धि है वह निश्चिंत रहता है। निश्चय बुद्धि की विजय होती आ रही है। बाबा हमको कहता है बेफिकर रहो, खुद बहुत फिकर करता है। जितना बच्चे तन-मन-धन से इन्श्योर करेंगे उतना ही मैं जिम्मेवार हूँ, रिटर्न देने के लिए। जब भक्तिमार्ग में देता हूँ, कोई कहते हैं इसने दान-पुण्य अच्छा किया है तो इसको अच्छे घर में जन्म मिला है, प्रैक्टिकल में देखा है। पूर्व जन्म में कुछ अच्छे कर्म किये हैं तब अच्छे घर में जन्म मिला है। तो अभी प्रैक्टिकल देखते हैं जितना अच्छे कर्म बाबा करा रहा है, हम नहीं कर रहे हैं बाबा करा रहा है और प्रत्यक्ष फल का अनुभव करा रहा है। अभी ही जैसे सुख शान्ति की दुनिया में रहते हैं। यज्ञ में बीज बोना माना अन्त मते सो गति अच्छी होगी। अभी भी कोई कमी नहीं होगी। मेरी तो अन्त मति अच्छी होगी ऐसा किसको निश्चय है हाथ उठाओ। जितना बाबा के घर की सेवा करो, उतना अच्छा रहोगे, ये गैरंटी है इसलिए निश्चय बुद्धि से निश्चिंत रहो क्योंकि सब अच्छा होना है।

त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी होकर रहो। पास्ट की कोई बात याद नहीं हो, प्रेजेंट की बात ही याद हो तो बहुत फायदा है। किसी का अवगुण न देखो तो मैंने देखा है, यह भी एक बहुत अच्छी विधि है सर्वगुण सम्पन्न बनने की। किसी का अवगुण देखेंगे तो मेरा अवगुण औरों को पहले दिखाई पड़ेगा, यह बड़ा सूक्ष्म हिसाब-किताब है। मुझे भगवान की दया से, सबकी दुआओं से सर्वगुण सम्पन्न बनना है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ पर्सनल है, पर परिवार में रहते हुए सर्वगुण सम्पन्न बनना। स्व-उन्नति के लिए और ईश्वरीय परिवार से सम्बन्ध बनाके रखने के लिए, सहयोगी बनने और बनाने के लिए सबसे अच्छी और बड़ी बात यह है कि हर एक में विशेषता देखो, गुण ही देखो। गुण और विशेषता प्रैक्टिकल लाइफ में है और खूबी सूक्ष्म है। कोई भी छोटी सी बात है, उसे ठीक कर दिया तो ऐसे अनेकों खूबी हो सकती हैं। यह ठीक नहीं होता है... चुप रहो ना। बाबा ने मुझे ऐसे ही नहीं अपना बनाया है, उसने अपना नाम बाला करने के लिए बनाया है।

भले चार सबजेक्ट हैं, पर सेवा के निमित्त ज्ञान जीवन में लाना आवश्यक है। ज्ञान कहता है योग ऐसा हो जो योग लगाना न पड़े, योगयुक्त, ज्ञानयुक्त, राज़युक्त, युक्तियुक्त रहें, ऐसे अपने आपको अच्छी तरह से प्रैक्टिस करते चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेनी हैं। चारों सबजेक्ट एक दो को साथ देती हैं। तन मन धन सम्बन्ध अच्छा तभी रहे जब मन अच्छा है। तन अच्छा रहे तो मन अच्छा है। मन में कोई इच्छा

ममता न हो, नहीं तो न तन अच्छा, न मन अच्छा, न सम्बन्ध अच्छा रहता है। मोटी बुद्धि यानि शिवबाबा जो कह रहा है वो समझ नहीं रहे हैं। ओम् के अर्थ में टिक जाने से मैं कौन हूँ का पता चलता है, तो लाइफ में बहुत फर्क दिखाई पड़ता है। मन अगर व्यर्थ से शान्त है, कोई भी कारण से मेरा संकल्प न चले। चलता है तो शान्ति का अनुभव नहीं होगा यानि हमारी पढ़ाई और कमाई का सार है, संकल्प शान्त शुद्ध बन जाए। बाबा जितना निष्कामी बनना है, दाता के बच्चे हैं। कैसे भी करके जो कर्मबन्धन हैं वह कट जायें उसके लिए जो पुरुषार्थ करना है वो अब कर लेने का चांस नहीं गंवायेंगे। यह नहीं कहे कि क्या करें थोड़ा कर्मबन्धन है, वेस्ट ऑफ टाइम। यह करें टाइम सफल हो गया, तो टाइम खुश है मेरे से, बाबा भी खुश है क्योंकि टाइम को सफल करने से टाइम भी हमें सफल कराने में हाज़िर होता है। यह महीन बातें जो बच्चे समझते हैं उनसे बाबा खुश हो जाता है। बाबा की बातों को समझेंगे तो बाबा खुश हो जाता है।

**दूसरा क्लास**

# "निष्काम सेवाधारी वह है जिसे मनी, मान की भूख नहीं है, सेवाधारी माना सच्ची दिल बड़ी दिल"

अकेले होते भी अनेकों के साथ मिलकर अगर चलते हैं तो कोई मुश्किल नहीं है। कोई कहता है मुझे दया आती है यह सिर्फ कहता है, पर करता कुछ नहीं है। हमेशा रोता रहता है। किसी की बात को समझने के लिए बड़ी दिल हो क्योंकि आजकल कोई किसी की बात को समझने की कोशिश नहीं करता है। मुस्करा तभी सकते हैं जब बड़ी बात को छोटा बनाना आता है, छोटी को बड़ा नहीं बनाओ। छोटी बात को सोचके बड़ा बनाते हैं तो जो खुद ही बड़ा बनाता है वह औरों पर क्या दया करेगा? उसका माइण्ड बिचारा एक मिनट भी शान्त नहीं होता है। दिल में एक मिनट के लिए भी किसी के प्रति प्यार नहीं पैदा होता है। मन में शान्ति, दिल में प्यार हो। उसके लिए ऐसी बातों को समझके पहले अपने ऊपर रहम करो। दया, रहम, कृपा, आशीर्वाद, इनसे भी सूक्ष्म सकाश है। तो जिसके पास सुख होगा, वो देने बिगर रह नहीं सकेगा। न दु:ख देना, न लेना इसको कहा जाता है दया, रहम, कृपा की। प्रैक्टिकली अनुभव जो है वो औरों को सुख देता है। इसके लिए अपने मन को अन्दर से सच्चाई से, प्रेम से, खुशी से शक्तिशाली बनाओ, खुद को प्यार करो। कईयों को खुद को प्यार करने के लिए टाइम नहीं है, तो औरों को कैसे प्यार करेंगे इसलिए पहले मैं खुद को प्यार करूँ।

परमात्मा बाप ने शिक्षाओं को धारण करने के लिए जो शक्ति दी है, उससे जो न काम की बात है वो अन्दर जाती नहीं है, इसमें बाहर की बात अन्दर न जावे - यह है अपने से प्यार करना, अपने पर दया करना। अगर सुबह से लेके यह बात... वह बात है... तो वो क्या दया करेगा? अरे, मेरा धर्म है शान्त रहना। सच्चाई और प्रेम से सबको रिगार्ड देना, रिस्पेक्ट देना, इससे औरों के मन में आपके प्रति रिगार्ड पैदा होगा। पहले परिवर्तन का रिकॉर्ड अच्छा हो। हमारा काम है सेल्फ रिस्पेक्ट में रहना, सबको रिस्पेक्ट देना। छोटों को स्नेह दो, बच्चे बिचारे क्यों ऐसे नाराज़, दु:खी रहते हैं क्योंकि बच्चों को बचपन से ले करके माँ-बाप का स्नेह नहीं मिलता है। भाई-बहनों का प्यार नहीं मिलता है। छोटे बच्चों में भी ईर्ष्या होती है, मम्मी इसको ज्यादा प्यार करती, मेरे को नहीं। मैं तो संसार समाचार से दूर रहती हूँ पर प्रैक्टिकल क्या हो, यह भावना है। सभी आज के दिन ऐसा अपने आप में ले लो, जो हजारों को दे सको। इसके लिए अपने को ठीक से टाइम दो, इसमें एक्स्ट्रा समय देने की बात नहीं है या इसमें टाइम लगने की भी बात नहीं है। सिर्फ समय को यथार्थ सफल करने की बात है।

शान्त में रहने के लिए बीच में कोई पुरानी बात का संकल्प याद न आवे, तो वो वायब्रेशन बड़े पॉवरफुल होते हैं। जिससे कदम-कदम पर सावधान रहने की समझ मिली है, उनके प्रति सम्मान दिल से निकलता है। और कोई कहे यह भी ऐसे करता है या ऐसे किया है, तो यह है डिसरिगार्ड। जिसको जो कहना वा करना है करे, पर मैं शान्ति और प्रेम नहीं छोड़ूँ। सामने वाला कितना भी कुछ बोले, पर मेरी शक्ल चेंज न हो। ऐसे नहीं क्या बोलती हो? तो इसमें हर बात एक्सेप्ट करो, एक्सपेक्ट नहीं करो। मैं किसी के लिए कुछ एक्सपेक्ट करूँ

और वो और कुछ करे तो मुझे सेल्फ रिस्पेक्ट नहीं है। सेल्फ रिस्पेक्ट में रहने के लिए बहुत अच्छा मटेरियल है, उसको यूज़ करो तो खुशी जैसे खुराक के मुआफिक काम करती है। सूक्ष्म है, मैं अपनी सीट पर सेट रहूँ और कभी अपसेट न हो जाऊं। जरा भी मेरे फेस में चेंज न आवे। आजकल देखा गया है ईर्ष्या वश सुखी को देख सहन नहीं करते, दु:खी को मदद नहीं करते। सारे विश्व में इस प्रकार का व्यवहार हो इन्सान का जो दु:ख, अशान्ति, हिंसा चली जाये। इसके लिए जो सुख हमने पाया है वह वायब्रेशन सब तक पहुँचें। बुद्धि बेहद में हो, कोई मनी मान की भूख नहीं है। मुझे मनी मिले, मान मिलें तो वह निष्काम सेवाधारी नहीं है। सेवाधारी माना सच्ची दिल बड़ी दिल। रिटर्न क्या दे रहे हैं, ऐसा ख्याल वा कोई एक्सपेक्ट नहीं करना है। परन्तु यह भी बाबा ने बताया है बच्चे, तुम सेवा करते चलो, आखिर जिसके सामने कोई परीक्षा आती है, तो यही घड़ी याद आयेगी, यह संगठन याद आयेगा। उसमें पेशेन्स, पीस, लव प्रैक्टिकली लाइफ में हो।

**तीसरा क्लास**

## "लास्ट आते भी पुरुषार्थ में फास्ट जाना है तो सिर्फ ज्ञान की गहराई में जाओ, समय का कदर करो, संकल्प को ऊंचा बना लो"

मैं सन्देशी नहीं हूँ पर जब भोग लगाने बैठती हूँ, मुझे खैंच होती है, बाबा खैंच रहा है। जब बाबा को भोग स्वीकार कराया जाता है, उस घड़ी स्पेशल संगठन में बैठने का दूसरा बाप को भोग स्वीकार कराने का अनुभव अच्छा होता है। बाबा को भी खैंच होती है। जब भारत में सेवायें शुरू हुई तो भोग लगाते-लगाते कई बहनें सन्देशी बन गयी, नहीं तो पहले इतनी सन्देशियाँ नहीं थी। तो समझा जाता था सन्देशी भोग लगावे। कलकत्ता में छोटे-से सेन्टर में 15-20 बहन भाई होंगे, बाथरूम भी अपना नहीं था। जब मैं उस समय वहाँ भोग लगाने बैठी थी, तो वो अनुभव आज दिन तक नहीं भूलता है। बाबा कहेगा सिर्फ भोग की ट्रे नहीं लेके आओ। आ जाओ मेरे पास। यह क्यों सुनाती हूँ? इस जीवन यात्रा में हर प्रकार का अनुभव हर एक को करना चाहिए, कोई भी अनुभव कोई को छोड़ना नहीं है। तो परोक्ष, अपरोक्ष साक्षात्कार मूर्त, सफलता मूर्त बनने में यह अनुभव भी बहुत मदद करता है।

मैंने जगदीश भाई को देखा, जब से बाबा का बच्चा बना तब से चारों ही सबजेक्ट में ज्ञान, योग, धारणा, सेवा का अनुभव बहुत अच्छा किया था। बाबा से इतना खज़ाना मिलता है वो सब अनुभव लिख करके औरों तक पहुँचाने के निमित्त भी बना। तो जगदीश भाई ने सबसे पहला बुक लिखा, परमात्मा का नाम, रूप, देश, काल, समय, कर्तव्य के बारे में इतना अच्छा बुक लिखा जिसे देख हम सब खुश हुए, दीदी खुश हुई। बहुत बड़ी इसकी स्टोरी है, उसने हमारे यज्ञ के हिस्ट्री में अपना यादगार अच्छा बनाया। विदेश सेवा शुरू करने का भी जगदीश भाई निमित्त बना। दीदी ने जगदीश भाई को बोला, दीदी ने कहा जाके जानकी का सिर खा, तो मेरे कमरे में मेरे पास जगदीश भाई आया। उन दिनों साकार में विदेश का कोई पत्र आता था तो बाबा मुझे वो पत्र देता था। बाबा के अव्यक्त होने के बाद वो सब संकल्प साकार हो गये। ड्रामा अनुसार अव्यक्त बापदादा की प्रेरणा से अभी भी ऐसा कोई बाबा को प्रत्यक्ष करने का कुछ करे ना! कहने का भाव यह है कि हमारे ऊपर सारी दुनिया को बदलने का आधार है क्योंकि हमें इतनी पालना, पढ़ाई, इतनी प्राप्ति हुई है, तो विश्व का एक कोना भी रह न जाये। हर एक को यह पता पड़े मेरा बाबा कौन! भले सतयुग में न भी आवे, लेकिन भावना है शान्तिधाम में भी जाने वाली आत्माओं को मौत के समय खुशी हो मैं जा रहा हूँ परमधाम में। अब नाटक में समय पूरा हुआ, यह सबको अच्छी तरह से पता पड़ जाना चाहिए।

हम सबके सामने भी विनाश का वो नज़ारा स्पष्ट बुद्धि में होना चाहिए। जिसके सामने विनाश का दृश्य रहता है वह विश्व में कहीं भी रहे उसके लिए शान्ति है। आत्मा अविनाशी है, बाबा अविनाशी है, उनसे जो खज़ाना मिलता है वो भी अविनाशी है। अभी जो प्राप्ति बाबा से हो रही है, जैसे आज बाबा ने कहा अपना फरिश्ता रूप इमर्ज करो। मैं आत्मा, परमात्मा का बच्चा हूँ। क्राइस्ट, बौद्ध, गुरुनानक से भी मैं ऊंचा हूँ, अभिमान नहीं है पर रीयली है। हमको बाबा नीचे से ऊपर ले जाने के लिए आया है। तो रहना है ऊपर, निमित्त मात्र यहाँ हैं। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति तब बनेगी जब यहाँ

निमित्त मात्र हैं, यह कार्य हुआ ही पड़ा है। जैसे ब्रह्माबाबा निमित्त मात्र है। जो बच्चा एडोप्ट होता है उसको बड़ा नशा होता है, पहले कैसा था, किसका था और अभी ऐसा हूँ, इसका हूँ, ऐसे वह नशा हो कि मैं परमात्मा का हूँ और मेरा फरिश्ता स्वरूप है, यहाँ सेवा के लिए सिर्फ निमित्त मात्र हैं... तो इससे उड़ने के पंख आ जाते हैं। उसके पहले ब्रह्मा बाप समान गृहस्थी से ट्रस्टी बनना सीखना पड़ेगा। ट्रस्टी माना मेरा कुछ नहीं, तो फ्री है जैसे मैं फ्री हूँ क्योंकि मुझे किसी का फिक्र नहीं है, तब सब अच्छे चल रहे हैं, मैं देख रही हूँ, बाबा भी देख रहा है। बाबा कहता है मेरे साथ रह करके साक्षी हो करके देखो। किसी को अगर अभी तक भी कौरवों जैसी थोड़ी भी माया आती हो तो उसको पाण्डव नहीं माना जायेगा। पाण्डव है तो प्रभु ही सब कुछ है, लाइट है, मेरा जी चाहता है आप सबकी लाइफ ऐसी हो। कौन पसंद करता है सबके साथ मिल करके चलना। चलते-चलते कोई मिल गया... चलते-फिरते खुश रहने में कोई मेहनत न लगे। खुशी पंख का काम करती है। हारमनी माना जरा भी अभिमान की अंश न हो, तब खुद भी खुश रह सकेंगे और अन्य को भी खुश कर सकेंगे। नहीं तो जैसे एक अन्धा, दूसरा अन्धेरा तो उन बिचारों का क्या हाल होगा? बाबा आकर अन्धों को ऑखें देता है, अन्धियारे से बचाकर रोशनी देता है। रोशनी हो पर नयन न हों तो कोई काम का नहीं। नयन हो पर रोशनी न हो तो कोई काम का नहीं। तो कितना भगवान हमारे लिए दया, कृपा, रहम का सागर है। बाप की याद से पास्ट के पाप कर्मों से फ्री हो जाते हैं। कोई भूल वा विकर्म हो जाता है तो उसे फॉरगिव्ह करके फॉरगेट करो और आगे से ऐसी भूल न हो, यह ध्यान रखना होगा। ज्ञानी तू आत्मा वो जो ध्यान रखे। ज्ञान माना ध्यान। ध्यान माना ऐसे ट्रांस में जाने की बात नहीं, पर ट्रांसपेरेंट स्टेज ध्यान में रहे। टेंशन फ्री, कोई टेंशन नहीं हो, नहीं तो कई हैं जो अपना बहुत सा समय सोच में गँवाते हैं। अगर ऐसी स्थिति बनानी है तो असोचता, अभोक्ता बनना होगा, उसके लिए त्याग वृत्ति, सेवा में अनासक्त वृत्ति फिर उपराम वृत्ति।

लेट आये हुए भी कोई अगर पुरुषार्थ में फास्ट जाना चाहें तो जा सकते हैं, सिर्फ ज्ञान की गहराई में जावें, समय का कदर करें, संकल्प को ऊंचा बनायें। त्याग वृत्ति से तपस्वी मूर्त बनने में बड़ा मजा है। आज्ञाकारी, सेवाधारी बच्चा होकर रहने में बहुत सुख है। निमित्त भाव, नम्रता स्वरूप हो, अभिमान का नाम-निशान न हो तब है सेवा क्योंकि प्रैक्टिकल का प्रभाव पड़ता है। चलते-फिरते भी किसी को अनुभव हो जाता है, बिना शब्दों के। उनकी दिल होती है इनसे कुछ बात करूँ, कुछ सुनूँ। कई बार ऐसी कुछ आत्मायें होती हैं जिन्हें मिलने मात्र से ही वह बहुत खुश होंगे। जिस समय जो करना है वो करके हर घड़ी को सफल करना है। किस समय क्या करना है, वो करेंगे परंतु यह जो टाइम मिला है वो कल्प के बाद... आप कहेंगे फिर से लण्डन आना, किसने देखा। पर यह अभी जो आयी हूँ ना, बाबा ने भेजा है। आप लोगों की सेवा के निमित्त बनाया है, तो उसका लाभ लेना यही समय को सफल करना है, हर कल्प यह रिपीट होता रहेगा।

त्याग और सेवा का भाग्य तो है पर कोई अच्छा एक्जाम्पुल बनें, तो यह भी एक बहुत बड़ा भाग्य है। जो बहुत समय से त्याग और सेवा से अपना भाग्य बनाता आ रहा है, उनको देख करके कईयों के पुरुषार्थ में परिवर्तन आता है। हमारे भाग्य को देख और भी अपना ऐसा भाग्य बनाना शुरू कर दें – यह है मैं भाग्यवान हूँ, इसका सबूत। तो अभी ऐसा कौन है याद में बैठे और बाबा खैंच लेवे? याद करना न पड़े, बाबा के लव में लीन हो जाए।

# "विशेष विचित्र अनुभव करते रहो तो खुशी के खज़ाने से भरपूर रहेंगे"

**(2016 में छोटे संगठन के बीच गुल्जार दादी जी के क्लासेस)**

ओम् शान्ति, सभी सुनते हुए बड़े हर्षित लग रहे थे। सबकी सूरतें मुझे बहुत प्यारी लग रही थी। सभी ऐसे लग रहे थे, जैसे अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हों। मुख से कुछ कहना भी चाहते हों लेकिन कह नहीं पा रहे थे। पूरा ही क्लास ऐसे लग रहा था, मानो बहुत डीप में जा रहे हों। सुनते-सुनते योग में स्थित हो जाना ही डीप है। सभी यहाँ बैठे सुन रहे थे, लेकिन लग रहा था जैसे यहाँ पर नहीं है। कोई और ही मस्ती में मस्त थे। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा बच्चों को कोई विशेष व विचित्र अनुभव करा रहे हैं। थोड़े समय बाद बोलना शुरू हुआ। लग रहा था, जैसे सभी बाबा के साथ वतन में हों। सबकी शक्लें प्राप्ति का

अनुभव करा रही थी। लग रहा था जैसे कोई विशेष प्राप्ति हुई है, लेकिन क्या पाया ये तो हरेक को अपना-अपना अनुभव होगा। ये भी अनुभवों की दुनिया में एक बहुत अच्छा अनुभव है। मुझे आप सबको देखकर ऐसे अनुभव हो रहा था, बाकी आप सबका अपना-अपना अनुभव होगा। ऐसे अनुभव करना बहुत जरुरी है, हमें ऐसे अनुभवों में जाना चाहिए। वैसे तो सभी को अनुभव होते ही हैं, लेकिन किसी-किसी समय विशेष और विचित्र अनुभव होते हैं। ऐसे विशेष अनुभवों में रहो तो ऐसे लगेगा मानो खुशी का खजाना मिल गया हो। ये विशेष खजाने सदा संभाल के रखना जिससे लगे कि मुझे कुछ मिला है। क्या मिला है? ये तो हरेक अपने को जानता है। बाबा कहते हैं कि जो भी छोटी-छोटी गलतियां करते हो, उनको आज के दिन समाप्त कर दो। समझते भी हैं कि ये रांग हैं लेकिन रांग भी कर लेते हैं। अभी बाबा का कहना है कि सम्पन्न बन अपनी सम्पूर्णता का स्वरूप दिखाओ। अभी सम्पूर्ण हो गये तो जल्दी ही सब खत्म हो जायेगा और हम बाबा के पास जाकर मिल जायेंगे। आज हम बाबा से प्रॉमिस करते हैं कि बाबा हम सदा खुश रहेंगे। बाबा हम और आप मिलकर कुछ नया कर दिखायेंगे। ओम् शान्ति।

**दूसरा क्लास –''सदा परमात्म प्यार के अनुभव में खाये रहो तो देहभान से न्यारे हो जायेंगे''**

यहाँ बैठे सबके मन में क्या चल रहा है? मैं कौन, मेरा कौन? ये तो सदा याद रहता है कि मैं बाबा का हूँ। बाबा किसका है? मेरा बाबा है, बाबा को जब मेरा कहते हैं तो कितना प्यार आता है! मेरा से प्यार होता है। चाहे पूरा जाने या नहीं जाने लेकिन जब मेरा बाबा कहा तो बाबा से सम्बन्ध जुट जाता है। अन्दर में प्रेम की शुद्ध लहरें आती हैं, उन लहरों में कितनी शक्ति भरी हुई होती है। कितना भी उनको भूलने की कोशिश करो लेकिन भूल नहीं सकते। बाबा मेरा है ना! जो मेरी चीज़ होती है, उससे ऑटोमेटिकली प्यार होता है। हम जब प्यार का शब्द मेरा बाबा कहते हैं, तो अन्दर में कितनी खुशी होती है! खुशी का रेस्पॉण्ड आता है। बाबा शब्द कहते ही बाबा के प्यार में खो जाते हैं। सभी बाबा के प्यार में समाये हुए हैं? सबने बाबा के प्यार का अनुभव किया है? हाथ उठाओ। जैसे अनेक जन्मों के बिछड़े हुए जब आपस में मिलते हैं तो प्यार का कितना अनुभव होता है! आपको भी भगवान के प्यार के अनुभव स्वरूप का ऐसा अनुभव होता है? जब बाबा के प्यार में खो जाते हैं तो उसकी प्राप्ति कितनी होती है! बाबा हमें अपने प्यार में समा लेते हैं। बाबा की याद के सिवाए और किसी बात में मजा ही नहीं आता। हरेक का दिल कह रहा है मेरा बाबा। मेरा बाबा क्या है, अनुभव है ना? बाबा और बच्चों का ये प्यार बहुत अलौकिक है। आप सबने इस अलौकिक प्यार का अनुभव किया? जिसने बाप और बच्चे का प्यार क्या होता है, ये अनुभव कर लिया, वो जानता है कि ये प्यार कितना श्रेष्ठ है। हरेक की शक्लों से ये प्यार दिखाई दे रहा है। बाबा के प्यार में सबके चेहरे कितने आकर्षक लग रहे हैं! बाप और बच्चों का ये आध्यात्मिक प्यार दिल को बहुत आकर्षित करता है। सभी ने परमात्म प्यार का अनुभव किया है? भाईयों ने किया है? इस प्यार में देह का कोई भान नहीं है, ये बहुत ही न्यारा और प्यारा है। जितना न्यारापन है उतना ही प्यारापन भी है। ये प्यार क्या है, आप जानते हो, एक सेकण्ड में ऑर्डर मिलता है अशरीरी बन जाओ। ये प्यार कितना विचित्र है! बाप और बच्चों के मिलन में कितनी राहत मिलती है! इस प्यार में मन को कितना सुख मिलता है! आप सबने ये अनुभव किया होगा। परमात्म प्यार बहुत अमूल्य वस्तु है। आप सब यहाँ परमात्म प्यार का अनुभव करने के लक्ष्य से आये हैं? तो सभी अपने आपसे पूछो, हमने परमात्म प्रेम का अनुभव किया? ये कोई साधारण मनुष्य का प्यार नहीं है, इसमें बॉडी-कॉन्सेसनेस नहीं है। परमात्म प्यार शब्द देखो कितना कॉमन है, लेकिन अतीन्द्रिय सुख का कितना अनुभव कराता है। ओम् शान्ति।

# दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

## "प्रवृत्ति में रहते व्यवहार और परमार्थ दोनों का बैलेन्स रखो, तपस्वी बनो"

इस घड़ी हम सभी सम्पूर्ण बनने की तपस्या कर रहे हैं। जैसे ऋषि एकान्त में बैठ तपस्या करते वैसे हम कर्मयोगी, राजयोगी, प्रवृत्ति में रहते एक बाबा के याद की तपस्या करते, घर जाने की, विकर्माजीत बनने की तपस्या करते। हम सब बेहद के सन्यासी हैं। यह सारी दुनिया जैसे जंगल है। यह जंगल जलने वाला है और हम जंगल के बीच अपनी तपस्या कर रहे हैं। हमें विकर्मों का बोझा समाप्त करना है। दिन-रात आंख खोलते, बन्द करते यही बुद्धि में फिकरात रहती कि

जितना-जितना हम याद करें उतना विकर्म विनाश हों, अवस्था पावन बनें, कर्मों का खाता चुक्तू हो और हम घर जायें। यही है हमारा रोज का पुरुषार्थ अथवा अभ्यास।

2. हम सब तपस्वी कुमार कुमारी हैं, जब यह अन्दर में पक्का होता तो सूक्ष्म में जो भावनायें रहतीं कि हम संसारी हैं, प्रवृत्ति वाले हैं, गृहस्थी हैं, वह सब मिट जाती। सदा यही चिन्तन रहता कि हमें तो तपस्या करनी है। तपस्वी बनने से प्रवृत्ति की अनेक समस्यायें मिट जाती क्योंकि बुद्धि में रहता यह तो पास्ट का बना हुए खेल पूरा करना है। उड़ने का संकल्प, जाने का संकल्प आते ही निमित्त मुसाफिर समझते और अपना सब कुछ समेटने में लग जाते। बाबा कहते बच्चे, अब सब कुछ समेट लेना है जितना समेट लो उतना हल्के होकर घर चलेंगे। यह जो सोचते कि हम गृहस्थी हैं, अब इस शब्द को बदल दो। गृहस्थी नहीं ट्रस्टी हो। इससे बोझ खत्म हो जाता।

3. बाबा ने कहा - तुम सब सैम्पुल हो प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहने वाले। दुनिया आपको कई आंखों से देखती। पहला तो देखती कि कहाँ यह घरबार छोड़कर तो नहीं चले जाते। स्त्री को भी सूक्ष्म में यह भय रहता, कहती इनको तो धुन लग गई है, सारा दिन योग में बैठे रहते हैं। सेन्टर पर बैठे रहते हैं। ऐसा तो नहीं यह मुझे छोड़ देंगे। यह सूक्ष्म भय एक दो को आगे बढ़ाने के बजाए अपनी-अपनी तरफ खींचने की कोशिश करता। हमारा पुरुषार्थ है एक दो को आगे बढ़ाना लेकिन इस एक भय के कारण अनेक विघ्न पैदा हो जाते हैं। बाबा ने कभी नहीं कहा कि तुम्हें घरबार छोड़ सन्यासी बन जाना है। लेकिन यह जरूर कहा है कि प्रवृत्ति में रहते निवृत्ति में रहो। उसके लिए ध्यान रखना होता कि परमार्थ और व्यवहार दोनों का बैलेन्स रहे। प्रवृत्ति माना बैलेन्स। अगर बैलेन्स नीचे ऊपर होता तो समझो प्रवृत्ति राइट नहीं।

4. आप सब अपना चार्ट चेक करो कि हम पक्के ट्रस्टी हैं? बुद्धि में यह पक्का है कि यह प्रवृत्ति वा परिवार मेरा नहीं परन्तु बाबा का है, ऐसे बुद्धि सरेन्डर है? एक दो में बुद्धि अटैच तो नहीं? कई बार माताओं की बच्चों में बहुत ममता होती। इसलिए पति को भी आंख दिखाती कि बाबा ने ऐसे थोड़ेही कहा है कि बच्चों का ध्यान न रखो। ऐसा ज्ञान थोड़ेही दिया है, इसके कारण आपस में दो मतें बन जाती। फिर मीठा-मीठा झगड़ा शुरू होता। प्रवृत्ति वालों को हमेशा बाबा कहते अगर तुम्हें अपना व्यवहार चलाना आता तो तुम बाबा का भी व्यवहार चला सकते। व्यवहार चलाना माना यह नहीं कि बाबा के व्यवहार से बुद्धि हटा लो। व्यवहार और परमार्थ दोनों का बैलेन्स हो।

5. बाबा ने हम सबको जो भी ईश्वरीय मर्यादायें बताई हैं। खुद से पूछो मैं उन सभी ईश्वरीय मर्यादाओं में बंधा हुआ हूँ। आप सब बहुत लकी हो। आपके पास डबल शक्ति है। कुमार, कुमारी तो अलग-अलग शक्ति है। आप दो इकट्ठी शक्ति हो। आप डबल काम कर सकते। आप सबके साथ में शक्ति ढाल है। शक्ति का केयरटेकर फिर पाण्डव हैं। दोनों की शक्ति से कोई भी कार्य सहज हो सकता है। लेकिन जब अन्दर में आता यह मेरी है, यह मेरा है तो अटैचमेन्ट आ जाती। फिर दुनिया ही बदल जाती। लेकिन वह शिव शक्ति जगतमाता है। तुम जगत पिता हो। तुम्हें बाबा का मंत्र है - तू अकेले आये, अकेले जाना है। इसलिए दो होते भी एक हो। तुम दोनों का वह एक है। जब ऐसी मर्यादा के अन्दर रहो तब कहेंगे तपस्वी कुमार-कुमारी का कंगन बांधा है। हम एक बाप के बच्चे आत्मा रूप में भाई-भाई हैं, फिर भाई-बहन हैं। इस नाते से भी अगर वृत्ति नहीं बदलती तो सदैव देखो वन्दे मातरम्, हमारे घर में यह जगतमाता दुर्गा देवी है। जब वह अपने को अम्बा समझे तो बुद्धि में रहेगा मैंने अपने पांव के नीचे असुर संघार किया। फिर कभी भी वृत्तियाँ उत्तेजित नहीं होंगी। अगर एक का संकल्प उठे तो दूसरा उसे योगदान दे। उसकी वृत्ति को खत्म करे। इसी का नाम है पर-वृत्ति। एक बाबा दूसरा न कोई, यह मंत्र सदैव याद रहे। हमारा पहला मंत्र है ''बी होली बी योगी।'' तो हरेक अपने से पूछो हम परिवार में ऐसे रहते हैं?

6. आप सब चतुर्भुज हो। चारों अलंकार शंख, चक्र, गदा, पदम साथ रहें। सदैव लाइट का चक्र चलता रहे। मुरलीधर की मुरली बजाते शंखध्वनि करते रहो। ज्ञान की गदा से विकारों को समाप्त करो तो पदम समान जीवन बन जायेगी। आपकी प्रवृत्ति अलंकार वाली प्रवृत्ति हो मेरी तेरी नहीं। ऐसे अलंकारधारी रहेंगे तो प्रेम और शान्ति से रहेंगे। प्रेम से रहो माना आपस में संस्कारों का टक्कर न हो। बाकी ऐसे नहीं प्रेम में अटैचमेन्ट हो जाए। यह भी सूक्ष्म माया है, इसे भी परखना है। कई बार समझते शान्ति से रहना है इसलिए इसने जो कहा वही श्रीमत है, उस पर चलते हैं। श्रीमती की मत को ही श्रीमत समझ लेते, वह फिर अपने पति देव की मत को ही श्रीमत समझ लेती। इससे भी बहुत नुकसान हो जाता। श्रीमत माना मुरली। मुरली में बाबा ने जो भी डायरेक्शन दिये हैं उसी अनुसार हमारा हर कदम हो। अच्छा।